सामाजिक विज्ञान

(भूगोल)

अध्याय-4: कृषि

SHIVOM CLASSES 8696608541

कृषि:-

कृषि एक प्राथमिक क्रिया है जो हमारे लिए अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न करती है। खाद्यान्नों के अतिरिक्त यह विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल भी पैदा करती है। इसके अतिरक्ति, कुछ उत्पादों जैसे चाय, कॉफी, मसाले इत्यादि का भी निर्यात किया जाता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

कृषि प्रक्रिया:-

- जुताई (खेत जोतना, मिट्टी को भुरभुरा करना)
- बुवाई (बीज बोना)
- निराई (खरपतवार निकालना)
- सिंचाई (पानी डालना)
- खाद खाद या उर्वरक डालना)
- कीटनाशक (कीड़े मारने वाली दवाई छिड़कना)
- कटाई (फसल पकने पर काटना)

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- दलाई/ गहराई (बालियों मे से बीज अलग करना)

कृषि प्रणाली:-

- निर्वाह कृषि
- गहन कृषि
- वाणिज्यिक कृषि
- रोपण कृषि

प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि:-

प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि: इस तरह की खेती जमीन के छोटे टुकड़ों पर होती है। इस तरह की खेती में आदिम औजार और परिवार या समुदाय के श्रम का इस्तेमाल किया जाता है। यह खेती मुख्य रूप से मानसून पर और जमीन की प्राकृतिक उर्वरता पर निर्भर करती है। किसी विशेष स्थान की जलवायु को देखते हुए ही किसी फसल का चुनाव किया जाता है।

कर्तन दहन प्रणाली/ स्थानांतरित कृषि:-

किसान जंगल की भूमि के टुकड़े को साफ करके अर्थात् पेड़ काटकर जलाते है, परिवार के जीविका निर्वाह के लिए खेती करते हैं और उस जमीन की उर्वरता कम होने के बाद किसी और जमीन के टुकड़े को साफ करके खेती करते हैं।

गहन निर्वाह कृषि:-

गहन निर्वाह कृषि में किसान एक छोटे भूखंड पर साधारण औज़ारों और अधिक श्रम से खेती करता है। अधिक धूप वाले दिनों से युक्त जलवायु और उर्वर मृदा वाले खेत में, एक वर्ष में एक से अधिक फ़सलें उगाई जा सकती हैं। चावल मुख्य फ़सल होती है। अन्य फ़सलों में गेहूँ, मक्का, दलहन और तिलहन शामिल हैं।

वाणिज्यिक कृषि:-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. इस प्रकार की कृषि के मुख्य लक्षण आधुनिक निवेशों जैसे अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त करना है।
2. कृषि के वाणिज्यीकरण का स्तर विभिन्न प्रदेशों में अलग – अलग है। उदाहरण के लिए हरियाणा और पंजाब में चावल वाणिज्य की एक फसल है परंतु ओडिशा में यह एक जीविका फसल है।

रोपण कृषि:-

एक प्रकार की वाणिज्यिक कृषि है जिसमें विस्तृत क्षेत्र में एकल फसल बोई जाती है। जिसमें अत्यधिक पूंजी निवेश व श्रम का प्रयोग होता है। भारत में चाय, कॉफ़ी, रबड़, गन्ना, केला इत्यादि मुख्य रोपण फसलें हैं।

गहन निर्वाह खेती और वाणिज्यिक खेती के बीच अंतर:-

प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि	**वाणिज्यिक कृषि**
छोटी भूमि जोत और सीमित भूमि ।	बड़ी भूमि जोत ।
पारंपरिक तकनीक और उपकरण उदाहरण:- कुदाल, डाओ, खुदाई करने वाली छड़ी।	आधुनिक तकनीक और उपकरण।
स्थानीय बाजार के लिए उत्पादन।	निर्यात के लिए उत्पादन।
एक वर्ष में दो या तीन फसलें।	एक ही फसल पर ध्यान।
मुख्य रूप से आजीविका और खाद्य फसलों का उत्पादन, उदाहरण:- धान , गेहूं	मुख्य रूप से व्यापार के लिए चिंता। उदाहरण:- गन्ना चाय, कॉफी

कृषि ऋतुएं:-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भारत में तीन शस्य ऋतुएँ हैं, जो इस प्रकार हैं:-

- रबी
- खरीफ
- जायद

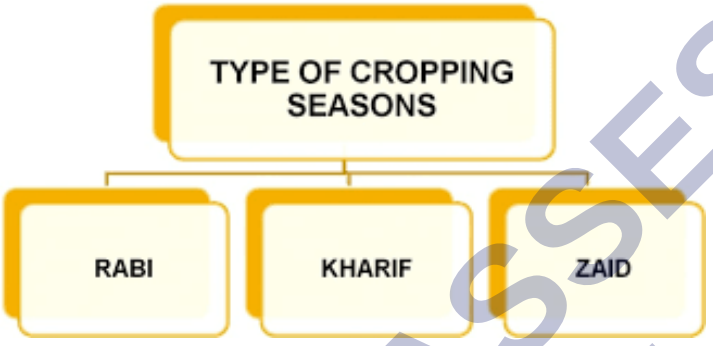

रबी फसलें:-

रबी फसलें शीतऋतु में अक्टूबर से दिसबंर के मध्य में बोई जाती हैं और ग्रीष्म ऋतु में अप्रैल से जून के मध्य काट ली जाती हैं। गेहूँ, जौ, मटर, चना और सरसों आदि मुख्य रबी फसलें हैं।

खरीफ फसलें:-

1. खरीफ फसलें देश के विभिन्न क्षेत्रों में मानसून के आगमन के साथ जून – जुलाई में बोई जाती हैं और सितंबर – अक्टूबर में काट ली जाती हैं।
2. खरीफ ऋतु की मुख्य फसलें चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, मूँग, उड़द, कपास, जूट, मूँगफली और सोयाबीन हैं।

जायद:-

रबी और खरीफ फसल ऋतुओं के बीच ग्रीष्म ऋतु में बोई जाने वाली फसल को जायद कहा जाता है। जायद ऋतु में मुख्यत तरबूज, खरबूजे, खीरे, सब्जियों और चारे की फसलों की खेती की जाती है। गन्ने की फसल को तैयार होने में लगभग एक वर्ष लगता है।

कृषि की मुख्य फसलें:-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **खाद्य फसलें:-** गेहूं, चावल, मक्का, दलहन, तिलहन
- **नकदी फसलें:-** चाय, कॉफी, रबड़, जूट, कपास
- **बागवानी फसलें:-** फल, फूल, सब्जियां

भारत में मुख्य फसलें:-

भारत में मुख्य रूप से चावल, गेहूँ, मोटे अनाज, दालें (दलहन), चाय, कॉफी, गन्ना, तिलहन, कपास, जूट इत्यादि फसलें उगाई जाती हैं।

मुख्य फसलें

1. **चावल:-** चावल भारत के अधिकांश लोगों की मुख्य फसल है। हमारा देश दुनिया में चीन के बाद चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
    - **जलवायु:-** धान एक उष्णकटिबंधीय फसल है और गीले मानसून में अच्छी तरह से बढ़ता है।
    - **तापमान:-** तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर, भारी आर्द्रता अपेक्षित।
    - **वर्षा:-** 100 सेमी . से ऊपर। इसे गर्मियों में भारी वर्षा और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई की आवश्यकता होती है।
    - **खेती के क्षेत्र:-** उत्तर और उत्तर पूर्वी भारत के मैदान, तटीय क्षेत्र और डेल्टा क्षेत्र। सिंचाई की मदद से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्से।
2. **गेहूं:-** गेहूं दूसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। यह उत्तर में और देश के उत्तर पश्चिमी भाग में मुख्य खाद्य फसल हैं।
    - **मृदा प्रकार:-** जलोढ़ मिट्टी और काली मिट्टी।
    - **तापमान:-** वृद्धि के समय ठंडा मौसम तथा कटाई के समय तेज धूप।
    - **वर्षा:-** 50 से 75 से.मी. वार्षिक वर्षा
    - **खेती के क्षेत्र:-** दक्कन के उत्तर पश्चिम और काली मिट्टी के क्षेत्र में गंगा सतलुज का मैदान।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **गेंहू उत्पादक राज्य:-** पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान हैं।

मोटे अनाज:-

1. ज्वार, बाजरा और रागी भारत में उगाए जाने वाले महत्वपूर्ण मोटे अनाज हैं। हालांकि, इनको अनाज के रूप में जाना जाता हैं। किन्तु इनमें पोषक तत्वों की मात्रा बहुत अधिक है।
2. ज्वार, क्षेत्र और उत्पादन के संबंध में तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है।

बाजरा:-

- **मृदा प्रकार:-** यह बलुआ और उथली काली मिट्टी पर उगाया जाता है।
- **बाजरा उत्पादक राज्य:-** राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और हरियाणा इसके मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

रागी:-

मृदा प्रकार:- रागी शुष्क प्रदेशों की फसल है और यह लाल, काली, बलुआ, दोमट और उथली काली मिट्टी पर अच्छी तरह उगायी जाती है।

रागी उत्पादक राज्य:- रागी के प्रमुख उत्पादक राज्य कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, झारखंड और अरुणाचल प्रदेश हैं।

मक्का:- मक्का एक ऐसी फसल है जिसका उपयोग भोजन ओर चारे दोनों के रूप में किया जाता है। यह एक खरीफ फसल है।

तापमान:- जो 21° सेल्सियस से 27° सेल्सियस तापमान में उगाई जाती है।

मृदा प्रकार:- पुरानी जलोढ़ मिट्टी पर अच्छी प्रकार से उगायी जाती है।

खेती के क्षेत्र:- बिहार जैसे कुछ राज्यों में मक्का रबी की ऋतु में भी उगाई जाती है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मक्का उत्पादक राज्य:- कर्नाटक, मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना मक्का के मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

आधुनिक प्रौद्योगिक निवेशों जैसे उच्च पैदावार देने वाले बीजों, उर्वरकों और सिंचाई के उपयोग से मक्का का उत्पादन बढ़ा है।

दालें:-

1. भारत विश्व में दाल का सबसे बड़ा उत्पादक होने के साथ साथ सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है।
2. शाकाहारी खाने में दालें सबसे अधिक प्रोटीन दायक होती हैं। तुर (अरहर), उड़द, मूँग, मसूर, मटर और चना भारत की मुख्य दलहनी फसले हैं।
3. दालों को कम नमी की आवश्यकता होती है और इन्हें शुष्क परिस्थितियों में भी उगाया जा सकता है। फलीदार फसलें होने के नाते अरहर को छोड़कर अन्य सभी दालें वायु से नाइट्रोजन लेकर भूमि की उर्वरता को बनाए रखती हैं। अतः इन फसलों को आमतौर पर अन्य फसलों के आवर्तन (rotating) में बोया जाता है।

दाल उत्पादक राज्य:- भारत में मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, और कर्नाटक दाल के मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

खाद्यान्नों के अलावा अन्य खाद्य फसलें

1. **गन्ना:-** ब्राजील के बाद भारत गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
   - **जलवायु:-** यह गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ता है।
   - **मृदा प्रकार:-** यह विभिन्न प्रकार की मिट्टी पर अच्छी तरह से उगाया जा सकता है।
   - **तापमान:-** तापमान की आवश्यकता 21°C से 27°C होती हैं।
   - **वर्षा:-** 75 सेमी और 100 सेमी के बीच वार्षिक वर्षा।
   - **प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्य:-** उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु हैं।
2. **तिलहन:-**

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भारत तिलहन का सबसे बड़ा उत्पादक है। मूंगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, अरंडी, बिनौला, अलसी और सूरजमुखी भारत के मुख्य तिलहन हैं।

दुनिया में मूंगफली का उत्पादन चीन (प्रथम), भारत (दूसरा) और रेपसीड उत्पादन में कनाडा, प्रथम, चीन, दूसरा और भारत दुनिया में तीसरा।

3. **चाय:-** दुनिया में चाय उत्पादन में 2020 में चीन प्रथम और भारत दूसरा।
   - **जलवायु:-** उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय (गर्म और आर्द्र) जलवायु में अच्छी तरह से विकसित होती हैं।
   - **मृदा प्रकार:-** गहरी उपजाऊ अच्छी तरह से सूखी मिट्टी जो ह्यूमस और कार्बनिक पदार्थों में समृद्ध हैं।
   - **वर्षा:-** 150 से 300 सेमी वार्षिक। उच्च आर्द्रता और लगाकर वर्षा पूरे वर्ष समान रूप से वितरित हो।
   - **प्रमुख चाय उत्पादक राज्य:-** असम और पश्चिम बंगाल।
4. **कॉफी:-**

चाय की तरह कॉफी को भी बागानों में उगाया जाता है। भारत में सबसे पहले यमन से अरेबिका किस्म की कॉफी को उगाया गया था। शुरुआत में कॉफी को बाबा बूदन पहाड़ियों में उगाया गया था।

बागवानी फसलें:-

1. सन् 2017 में भारत का विश्व में फलों और सब्जियों के उत्पादन में चीन के बाद दूसरा स्थान था। भारत उष्ण और शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादक है।
2. भारत का मटर फूलगोभी, प्याज, बंदगोभी, टमाटर, बैंगन और आलू उत्पादन में प्रमुख स्थान है।

अखाद्य फसलें

1. **रबड़:-**

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

रबड़ भूमध्यरेखीय क्षेत्र की फसल है परंतु विशेष परिस्थितियों में उष्ण और उपोष्ण क्षेत्रों में भी उगाई जाती है। रबड़ एक महत्त्वपूर्ण कच्चा माल है जो उद्योगों में प्रयुक्त होता है।

- **वर्षा:-** इसको 200 सेमी. से अधिक वर्षा और 25° सेल्सियस से अधिक तापमान वाली नम और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
- **रबड़ उत्पादक राज्य:-** इसे मुख्य रूप से केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, अंडमान निकोबार द्वीप समूह और मेघालय में गारो पहाड़ियों में उगाया जाता है।

2. **कपास:-**

भारत को कपास के पौधे का मूल स्थान माना जाता है। सूती कपड़ा उद्योग में कपास एक मुख्य कच्चा माल है। कपास उत्पादन में भारत का विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है (2017)।

- **मृदा प्रकार:-** दक्कन पठार के शुष्कतर भागों में काली मिट्टी कपास उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
- **तापमान:-** इस फसल को उगाने के लिए उच्च तापमान, हल्की वर्षा या सिंचाई, 210 पाला रहित दिन और खिली धूप की आवश्यकता होती है।
- **गेंहू उत्पादक राज्य:-** महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश कपास के मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

यह खरीफ की फसल है और इसे पककर तैयार होने में 6 से 8 महीने लगते हैं।

जूट:-

जूट के लिए अच्छी जल निकासी वाली बाढ़ के मैदानों की उपजाऊ मिट्टी की जरूरत होती है। जूट के मुख्य उत्पादक हैं पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा और मेघालय।

शस्यावर्तन:-

भूमि की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए भूमि के किसी टुकड़े पर फसलें बदल बदल कर बोना।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

चकबंदी:-

बिखरी हुई कृषि जोतों अथवा खेतों को एक साथ मिलाकर आर्थिक रूप से लाभ प्रद बनाना।

हरित क्रांति:-

कृषि क्षेत्र में अधिक उपज वाले बीजों का प्रयोग, आधुनिक तकनीक, अच्छी खाद / उर्वरकों का प्रयोग करने से कुछ फसलों विशेषकर गेहूँ के उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि को हरित क्रांति कहते हैं।

हरित क्रांति की हानियाँ:-

- अत्यधिक रसायनों के कारण भूमि का निम्नीकरण।
- सिंचाई की अधिकता से जल स्तर नीचा।
- जैव विविधता समाप्त हो रही है।
- अमीर और गरीब किसानों के मध्य अंतर बढ़ गया है।

श्वेत क्रांति:-

दूध के उत्पादन में वृद्धि के लिए पशुओं की नस्लों को सुधारना (आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करके)

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व:-

- भारत कृषि प्रधान देश है।
- लगभग दो – तिहाई आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर सीधे निर्भर करती है।
- कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य भाग है।
- यह सकल घरेलू उत्पाद का 26% है।
- यह देश के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है और उद्योगों के लिए कई कच्चे माल का उत्पादन करता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भारतीय कृषि की विशेषताएं:-

- किसानों के पास जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा होता है और मुख्य रूप से अपने स्वयं के उपभोग के लिए फसलें उगाते हैं।
- विभिन्न प्रकार की कृषि गतिविधियों में पशु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- किसान मुख्य रूप से मानसून की बारिश पर निर्भर रहते हैं।

भारतीय कृषि पर भूमंडलीय के प्रभाव:-

- भारतीय किसानों को इन उत्पादों के लिए अस्थिर कीमतों के लिए मजबूर होना पड़ सकता हैं, जिसमें साल दर साल बड़े पैमान पर उतार – चढ़ाव आते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर और घरेलू स्तर पर कृषि उत्पादों की कीमतों पर व्यापार उदारीकरण का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है। कि अन्य देश किन नीतियों का पालन करते हैं।
- प्रमुख कृषि वस्तुओं के निर्यात को उदार बनाया गया है।
- फसलों की उच्च उपज देने वाली किस्मो की शुरूआत के साथ बड़ा परिवर्तन हुआ।
- इस नवाचार, बुनियादी ढांचे में निवेश, क्रेडिट विपणन और प्रसंस्करण सुविधाओं के विस्तार के साथ आधुनिक आदानों के उपयोग में उल्लेखित वृद्धि हुई।

भारत में घटते खाद्य उत्पादन के लिए उत्तरदायी कारण:-

- गैर कृषि उपयोग के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण बोए गए क्षेत्र में कमी।
- रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के अधिक उपयोग के कारण उपजाऊ क्षमता में कमी।
- असक्षम तथा अनुचित जल प्रबंधन ने जलाक्रांतता और लवणता की समस्या को उत्पन्न किया।
- अत्यधिक भू – जल दोहन के कारण भौम जल स्तर गिर गया है, इससे कृषि लागत में वृद्धि।
- अपर्याप्त भंडारण क्षमता तथा बाज़ार का अभाव।8

भारत में किसानों के सामने चुनोतियाँ:-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- मानसून की अनिश्चितता।
- गरीबी और ऋण का दुश्चक्र।
- शहरों की ओर पलायन।
- सरकारी सुविधाओं तक पहुँच में कठिनाई और बिचौलिए।
- अर्न्तराष्ट्रीय प्रतियोगिता।

भारत में कृषिगत सुधारों के उपाय:-

- अच्छी सिंचाई व्यवस्था, जैविक खाद, आधुनिक कृषि यंत्रों आदि का उपयोग।
- किसानों की प्रत्यक्ष सहायता, बैंक खाते में सहायता रकम का सीधा पहुंचना।
- सरकारी सहायता, सस्ते ऋण।
- बिजली पानी की सुलभता।
- बाजारों तक सुगमता।
- बाढ़, सूखे, चक्रवात, आग, कीट आदि से बचाव के लिए फसल बीमा।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य, ग्रामीण बैंक, किसान कार्ड आदि।
- कृषि संबधी शिक्षा, मौसम संबंधी जानकारी देना।
- राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय कृषि सेमिनारों का आयोजन और आम किसान की पहुँच उन तक होना।
- कृषि विद्यालय, विश्वविद्यालय और अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना और उपयोग।

सरकार द्वारा किसानों के हित में किए गए संस्थागत सुधार:-

- फसलों की बीमा सुविधा देना।
- सहकारी बैंकों का विकास कर किसानों को ऋण सुविधा उपलब्ध कराना।
- फसलों के समर्थन मूल्य का उचित निर्धारण कर प्रोत्साहित करना।
- मौसम संबंधी सूचनाओं को समय – समय पर प्रसारित करना।
- कृषि संबंधी नवीन तकनीक, औजारों, उर्वरकों आदि से संबंधित कार्यक्रम रेडियो तथा दूरदर्शन पर प्रसारित करना।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 49)

प्रश्न 1 बहुवैकल्पिक प्रश्न-

1. निम्नलिखित में से कौन-सा उस कृषि प्रणाली को दर्शाता है जिसमें एक ही फसल लम्बे-चौड़े क्षेत्र में उगाई जाती है?
   a) स्थानांतरी कृषि
   b) रोपण कृषि
   c) बागवानी
   d) गहन कृषि

उत्तर – b) रोपण कृषि

2. इनमें से कौन-सी रबी फसल है?
   a) चावल
   b) मोटे अनाज़
   c) चना
   d) कपास

उत्तर – c) चना

3. इनमें से कौन-सी एक फलीदार फसल है?
   a) दालें
   b) मोटे अनाज
   c) ज्वार
   d) तिल

उत्तर – a) दालें

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए:

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. एक पेय फसल का नाम बताएँ तथा उसको उगाने के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का विवरण दें।

उत्तर – चाय एक महत्त्वपूर्ण पेय पदार्थ की फसल है। चाय का पौधा उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु, ह्युमस और जीवांश युक्त गहरी मिट्टी तथा सुगम जल निकास वाले ढलवाँ क्षेत्रों में उगाया जाता है। चाय की खेती के लिए वर्ष भर कोष्ण, नम और पालारहित जलवायु की आवश्यकता होती है। वर्ष भर समान रूप से होने वाली वर्षा इसकी कोमल पत्तियों के विकास में सहायक होती है। भारत विश्व का अग्रणी चाय उत्पादक देश है।

2. भारत की एक खाद्य फसल का नाम बताएँ और जहाँ यह पैदा की जाती है उन क्षेत्रों का विवरण दें।

उत्तर – चावल भारत की मुख्य खाद्य फसल है। यह भारत के उत्तर और उत्तर-पूर्वी मैदानों, तटीय क्षेत्रों और डेल्टाई प्रदेशों में उगाया जाता है।

3. सरकार द्वारा किसानों के हित के किए गए संस्थागत सुधार कार्यक्रमों की सूची बनाएँ?

उत्तर –

- आज़ादी के पश्चात् सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में संस्थान सुधर करने हेतु जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा ज़मींदारी प्रथा को समाप्त करने को उच्च प्राथमिकता दी गई।
- 1980 एवं 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम के अंतर्गत सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग एवं बीमारी जैसी घटनाओं से फसलों को बचने हेतु फसल बीमा योजना लागू की गई।
- किसानों को कम सरों पर ऋण मुहैया कराने के लिए विभिन्न ग्रामीण बैंकों तथा सहकारी समितियों की स्थापना की गई।
- न्यूनतम समर्थन कीमत के ऐलान का प्रावधान किया गया ताकि बिचौलियों एवं दलालों द्वारा किसानों का शोषण न हों।
- किसानों के सयादे के लिए सरकार द्वारा "किसान क्रेडिट कार्ड" तथा व्यकितगत दुर्घटना बीमा योजना शुरू की गई है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

4. दिन-प्रतिदिन कृषि के अंतर्गत भूमि कम हो रही है। क्या आप इसके परिणामों की कल्पना कर सकते हैं?

उत्तर – भारत में लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि भूमि में कमी आई है। भूमि के आवासन इत्यादि गैर कृषि उपयोगों तथा कृषि के बीच बढ़ती भूमि की प्रतिस्पर्धा के कारण कृषि भूमि में कमी आई है। भारत की बढ़ती जनसंख्या के साथ घटता खाद्य उत्पादन देश की भविष्य की खाद्य सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लगाता है। कुछ अर्थशास्त्रियों को मानना है कि बढ़ती जनसंख्या के कारण घटते आकार के जोतों पर यदि खाद्यान्नों की खेती ही होती रही तो भारतीय किसानों का भविष्य अंधकारमय है। भारत में 60 करोड़ लोग लगभग 25 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर निर्भर हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति के हिस्से में औसतन आधा हेक्टेयर से भी कम कृषि भूमि आती है। इसलिए जनसंख्या नियंत्रित करने की कोशिश करनी होगी नहीं तो खाद्य संकट उत्पन्न हो जाएगा तथा किसानों की स्थिति दयनीय हो जाएगी।

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए:

1. कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा किये गए उपाय सुझाइए।
2. भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर टिप्पणी लिखें?
3. चावल की खेती के लिए उपयुक्त भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन करें।

उत्तर –

1. कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा निम्नलिखित उपाय किये गए हैं-

a) स्वतंत्रता के पश्चात् देश में संस्थागत सुधार करने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा जमींदारी आदि की समाप्ति करने की प्राथमिकता दी गयी।

b) प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि सुधार मुख्य लक्ष्य था।

c) पैकेज टेक्नोलॉजी पर आधारित हरित क्रांति तथा श्वेत क्रांति जैसी कृषि सुधार के लिए कुछ रणनीतियाँ आरम्भ की गई थी।

d) न्यूनतम सहायता योजना, फसल बीमा के प्रावधान, कृषि निवेश तथा साधनों जैसे-उर्जा और उर्वरकों के लिए सहायिकी, ग्रामीण बैंक तथा सहकारी समितियों की स्थापना, किसान

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

क्रेडिट कार्ड तथा व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना जैसी कुछ योजनाएँ हैं जो सरकार ने शुरू की हैं।

2.

- वैश्वीकरण के प्रभाववश भारत में वानिजियक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन मिला है।
- कृषि क्षेत्र में अलग - अलग प्रकार के ढाँचागत सुधार जैसे प्रौद्योगिकी बदलाव, बाजार सुविधा, साख विस्तार आदि वैश्वीकरण के ही परिणाम है।
- हरित क्रातिं, श्वेत क्रातिं, पीली करतीं वगैरह के परिणामस्वरूप विभिन्न पारकर की फसलों के उत्पादन में बढ़त सभंव हुई है।
- कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़व दिया जाता है।
- कर्बानिक कृषि को प्रोत्साहन मिला है।
- "जीन क्रातिं" अथवा जननिक इंजीनियरी जैसी नै अवधारणाओं का कृषि में इस्तेमाल किया जाने लगा है। जिसके अंतर्गत नैन सकंर किस्मों के बीजों का आविष्कार किया जाता है।

3. भारत में अधिकांश लोगों को खाद्यान्न चावल है। हमारा देश चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है। यह एक खरीफ फसल है जिसे उगाने के लिए उच्च तापमान (25º सेल्सियस से ऊपर) और अधिक आर्द्रता (100 सैंटीमीटर मीटर से अधिक वर्षा) की आवश्यकता होती है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसे सिंचाई करके उगाया जाता है। चावल उत्तर और उत्तर-पूर्वी मैदानों, तटीय क्षेत्रों और डेल्टाई प्रदेशों में उगाया जाता है। नदी घाटियों और डेल्टा प्रदेशों में पाई जाने वाली जलोढ़ मिट्टी चावल के लिए आदर्श होती है। नहरों के जाल और नलकूपों की सघनता के कारण पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ कम वर्षा वाले क्षेत्रों में चावल की फसल उगाना संभव हो पाया है। चावल जून-जुलाई में दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों के शुरू होने पर उगाया जाता है और पतझड़ की ऋतु में काटा जाता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)